भारतीय विदेश नीति: सिद्धांत, विकास और वर्तमान परिदृश्य

प्रस्तावना

किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र की विदेश नीति उसके **राष्ट्रीय हितों (National Interests)**, संप्रभुता और आर्थिक विकास की सुरक्षा का सबसे महत्वपूर्ण साधन होती है। **भारत की विदेश नीति** का मूल उद्देश्य देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करना, सीमाओं की रक्षा करना, तीव्र आर्थिक विकास के लिए वैश्विक सहयोग जुटाना और विश्व पटल पर भारत के प्रभाव को बढ़ाना है। ऐतिहासिक रूप से भारत की नीति हमेशा से **शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व** और वैश्विक कल्याण की समर्थक रही है।

भारतीय विदेश नीति के मार्गदर्शक सिद्धांत

भारतीय विदेश नीति कुछ सनातन और समकालीन सिद्धांतों पर आधारित है, जो इसे दुनिया के अन्य देशों से अलग बनाते हैं:

- **गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment):** स्वतंत्रता के बाद जब दुनिया अमेरिका और सोवियत संघ (रूस) के दो गुटों में बंटी थी, तब भारत ने किसी भी सैन्य गुट में शामिल न होकर अपनी **रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy)** को चुना। आज यह नीति **'बहु-संरेखण' (Multi-alignment)** में बदल चुकी है, जहाँ भारत अपने हितों के अनुसार सभी प्रमुख देशों से समान रूप से संबंध रखता है।
- **पंचशील सिद्धांत (Panchsheel):** 1954 में घोषित इन पाँच सिद्धांतों में एक-दूसरे की अखंडता का सम्मान, गैर-आक्रामकता, आंतरिक मामलों में अहस्तक्षेप, समानता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व शामिल हैं।
- **वसुधैव कुटुंबकम:** "संपूर्ण विश्व एक परिवार है" की भारतीय संस्कृति की यह सोच आज भी हमारी विदेश नीति की आत्मा है। जलवायु परिवर्तन, महामारी और वैश्विक संकटों के समय भारत हमेशा विश्व कल्याण के लिए आगे रहता है।
- **नेबरहुड फर्स्ट (Neighborhood First) और एक्ट ईस्ट (Act East):** भारत अपने पड़ोसी देशों (जैसे नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका) के विकास और स्थिरता को प्राथमिकता देता है। साथ ही, दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों (ASEAN) के साथ आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत करने पर विशेष जोर है।

ऐतिहासिक विकास और बदलाव

1947 से लेकर आज तक भारत की विदेश नीति कई चरणों से गुजरी है:

1. **आदर्शवादी दौर (1947-1962):** पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में नीति मुख्य रूप से गुटनिरपेक्षता, उपनिवेशवाद के विरोध और वैश्विक शांति के आदर्शों पर टिकी थी।
2. **यथार्थवादी और व्यावहारिक दौर (1962 के बाद):** 1962 के भारत-चीन युद्ध और बाद में पाकिस्तान के साथ युद्धों के बाद भारत ने अपनी रक्षा क्षमता को मजबूत करने और यथार्थवादी (Pragmatic) नीति अपनाने पर बल दिया। 1971 की भारत-सोवियत संधि इसका बड़ा उदाहरण थी।

Defence HRG

3. **आर्थिक सुधार और वैश्विक जुड़ाव (1991 के बाद):** शीत युद्ध की समाप्ति और भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद, विदेश नीति का ध्यान आर्थिक कूटनीति, विदेशी निवेश और व्यापार पर केंद्रित हुआ। इसी दौर में भारत ने खुद को एक परमाणु संपन्न राष्ट्र के रूप में भी स्थापित किया।

वर्तमान स्वरूप: 'इंडिया फर्स्ट' और 'ग्लोबल साउथ' की आवाज

आज भारत की विदेश नीति अत्यधिक **आत्मविश्वास और सक्रियता** से भरी है। वर्तमान में भारत किसी वैचारिक बंधन में बंधने के बजाय **'इंडिया फर्स्ट' (भारत प्रथम)** की नीति पर चलता है।

- **संतुलन साधने की कला:** भारत एक तरफ अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ **'क्वाड' (QUAD)** संगठन का हिस्सा है, तो दूसरी तरफ रूस और चीन के साथ **ब्रिक्स (BRICS)** और **एससीओ (SCO)** जैसे मंचों पर भी सक्रिय है। रूस-यूक्रेन संकट के दौरान भी भारत ने बिना किसी दबाव में आए अपने राष्ट्रीय हितों और कच्चे तेल की जरूरतों को प्राथमिकता दी।
- **वैश्विक नेतृत्व:** G20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने खुद को **'ग्लोबल साउथ' (विकासशील और गरीब देशों)** की मजबूत आवाज के रूप में स्थापित किया है।

प्रमुख चुनौतियाँ

- **पड़ोस में अस्थिरता और सीमा विवाद:** चीन की आक्रामक विस्तारवादी नीति (LAC पर तनाव) और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद भारत के लिए सबसे बड़ी सुरक्षा चुनौतियाँ हैं।
- **भू-राजनीतिक ध्रुवीकरण:** अमेरिका-चीन और अमेरिका-रूस के बीच बढ़ते तनाव के बीच अपनी स्वायत्तता बनाए रखना एक कठिन काम है।
- **आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा:** वैश्विक मंदी, युद्धों के कारण आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) में बाधा और तेल-गैस की कीमतों में उतार-चढ़ाव भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

संक्षेप में, भारत की विदेश नीति आदर्शवाद से व्यावहारिक यथार्थवाद की ओर सफलतापूर्वक बढ़ी है। आज भारत केवल एक मूक दर्शक नहीं, बल्कि वैश्विक एजेंडा तय करने वाला एक **'वैश्विक खिलाड़ी' (Global Player)** बन चुका है। अपनी संप्रभुता से समझौता किए बिना, शांति और विकास के मार्ग पर चलना ही भारतीय विदेश नीति की सबसे बड़ी सफलता है।

यदि आप इस निबंध में **भारत-चीन संबंधों**, **भारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी** या **परमाणु नीति** जैसी किसी विशेष उप-विषय (Sub-topic) पर एक अलग पैराग्राफ जुड़वाना चाहते हैं, तो मुझे बताएं।

Defence HRC